1. बढ़े चलो

(कविता)

वीर तुम बढ़े चलो,
धीर तुम बढ़े चलो।

हाथ में ध्वजा रहे,
बाल-दल सजा रहे।
ध्वज कभी झुके नहीं,
दल कभी रुके नहीं।
वीर तुम बढ़े चलो,
धीर तुम बढ़े चलो।

सामने पहाड़ हो,
सिंह की दहाड़ हो।
तुम निडर हटो नहीं,
तुम निडर डटो वहीं,
वीर तुम बढ़े चलो,
धीर तुम बढ़े चलो।

Scanned with CamScanner

मेघ गरजते रहें,
मेघ बरसते रहें।
बिजलियाँ कड़क उठें,
आसमान गरज उठे।
वीर तुम बढ़े चलो,
धीर तुम बढ़े चलो

प्रातः हो कि रात हो,
संग हो न साथ हो।
सूर्य से बढ़े चलो,
चंद्र से बढ़े चलो।
वीर तुम बढ़े चलो,
धीर तुम बढ़े चलो।

—द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

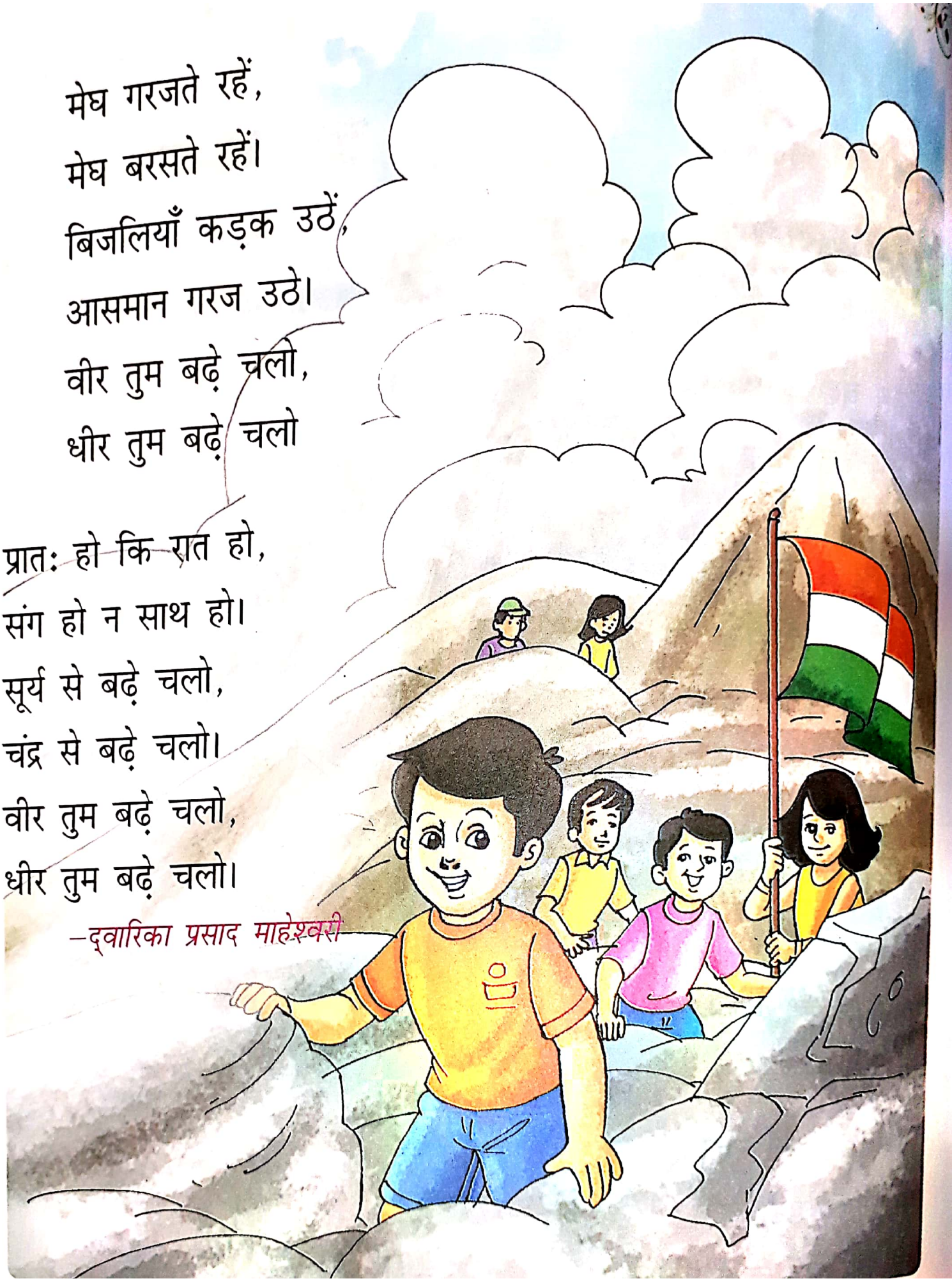

Scanned with CamScanner

शब्द-ज्ञान

धीर	=	धैर्यवान, शांत	निडर	=	बिना डरे हुए
ध्वजा, ध्वज	=	झंडा	मेघ	=	बादल
दल	=	समूह	प्रातः	=	सवेरा
दहाड़	=	सिंह की गर्जना	बाल दल	=	बच्चों का समूह
सिंह	=	शेर			

अभ्यास

कविता से

- **बताइए–**
  - इस कविता में क्या करते जाने को कहा गया है?
  - हमारे हाथ में क्या होना चाहिए?
  - धीर किसे कहा गया है?

- **उत्तर लिखिए–**

1. इस कविता में किस ध्वज की बात कही गई है? ध्वज कैसा रहना चाहिए?

.....

2. तुम्हारे रास्ते में क्या-क्या मुसीबतें आ सकती हैं?

.....

Scanned with CamScanner